विराग उपदेश

प्रस्तुत कृति गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज के अन्तिम उपदेश पर आधारित है, जिसका संकलन एवं अनुवाद महाकवि आचार्य श्री 108 विभवसागर जी ने किया। गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी का जन्म 2 मई 1963 को ग्राम- पथरिया, जिला- दमोह (मध्य प्रदेश) में हुआ था। तथा 04 जुलाई 2024 को जालना (महाराष्ट्र) में इस ज्योतिपुंज का अस्त हो गया।

कृति में संकलन कर्ता परम पूज्य आचार्य श्री विभवसागर जी ने गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के 03 जुलाई 2024 लगभग दोपहर 3:00 बजे से 4:00 बजे के बीच अरूण कोटड़िया, अहमदाबाद के द्वारा बनाई गई एवं जिनवाणी चैनल पर प्रसारित विडियो के मध्य से संकलन किया। जिसमें उन्होंने कहा- **जीवन क्षणभंगुर है। पता नहीं, किसके जीवन का कब समापन हो जाये? इसलिए शास्त्रों में, आचार्यों ने कहा- साधुगण पूर्व से ही तैयार रहते हैं।**

आगे कहा- **किसी न किसी योग्य शिष्य के लिए ये जिम्मेदारी सौंपकर के हल्का हो जाना चाहिए। यही जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा है। तीर्थंकर भगवान की आज्ञा है। आगम की आज्ञा है।**

सात आचार्य हैं। आठ व सात उपाध्याय हैं। गणधर हैं। स्थविर हैं। प्रवर्तक हैं। गणिनी माता जी लोग हैं। वो अपने-अपने संघ का अच्छी तरह से पालन करें। अपन लोग सहयोगी बनें। ऐसा मेरा आपके लिए एक उपदेश है, संकेत है, आदेश है।

इसका अनुवाद पूज्य महा कवि विभवसागर जी ने विष्णुपद छंद में किया ।

जीवन क्षणभंगुर है चेतन ! कर समाधि जाना।

पता नहीं किसके जीवन कब, शांत समय आना ।।

इसीलिए शास्त्रों में ऐसा, कहें मुनीश्वर हो।

पहले से तैयार रहें मुनि, जीवन नश्वर हो।।

जिम्मेदारी सौंप योग्य को, हल्के हो जाना।

यह जिन आज्ञा ! भगवद् आज्ञा, श्रुत आज्ञा माना ।।

सात सूरि हैं, सात हैं पाठक, संघ में गणधर हैं।

संघ स्थविर, संघ प्रवर्तक, गणिनी माता हैं।।

वो अपने-अपने संघों को, भली भाँति पालें।

अपन सभी सहयोगी बनकर, सब इक साथ चलें।।

यह उत्तम उपदेश आपके, लिए हमारा है।

यही इशारा ये ही तो, आदेश हमारा है।।

इस तरह से 16 छंदों में इस उपदेश का अनुवाद पूर्ण किया इस पुस्तक में आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज पर आधारित 10 छंदों में *"विराग गुरु वंदना"*दो गुरु पूजा आदि हैं। इस कृति का प्रकाशन 36 पेज में श्रमण श्रुत सेवा संस्थान जयपुर,शाखा-इंदौर द्वारा किया गया। यह कृति गुरु भक्ति परक श्रेष्ठ कृति है।

तरूण श्रद्धांजलि

जैन धर्म एवं दर्शन की अध्यात्मिक यात्रा आत्मा को परमात्मा बनाने की विलक्षण वैज्ञानिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को जानने समझने एवं जीवन में उतारने का सौभाग्य सभी को प्राप्त नहीं होता है। वह विरले व्यकित्व अपनी जीवन यात्रा पूर्व जन्म की संचित पुण्य वर्गणाओं से संचालित कर अल्पवय में ही संयम, तप, त्याग एवं स्वाध्याय को समन्वय करके ऊर्ध्वगमन का शुभारंभ करते हैं ऐसे ही विरले व्यक्तित्व के धनी है ग्राम गुहांची, जिला-दमोह (मध्य प्रदेश) में श्रावकरत्न श्रीमान् प्रतापचंद्र जैन एवं श्रीमती शांतिबाई के गर्भ से 26 जून 1967 को जन्में बालक पवन कुमार जैन आज भारत के शीर्शस्थ संतों में से एक थे। पूज्य श्री ऐसे संत थे जिन्होंने 21 वर्ष की अल्पायु में दिगम्बर बाना को धरकर अपने मूलगुणों का दृढ़ता से पालन करते हुए जैनेत्तर वर्ग में भी **कड़वे प्रवचन** के माध्यम से जैन मुनियों को पहचान है। उनका संकल्प था कि- **मैं महावीर को चौराहों पर लाकर खड़ा कर दूंगा।** मुनि श्री तरुण सागर जी महाराज आबालवृद्ध के दिलों पर शासन करने वाले ऐसे संत हैं जिनका द्वार बच्चों, युवाओं, प्रौढ़ों एवं वृद्धों के लिए हमेशा खुला रहता है, जो जैन सिद्धांत से सम्बन्धीत शंकाओं का समाधान निर्भीकता से करते थे।

प्रस्तुत कृति **"तरूण श्रद्धाञ्जली"** आचार्यश्री विभवसागर जी के मुम्बई वर्षायोग 2018 में **मुनि श्री तरुण सागर जी महाराज** की समाधि पर किये गये प्रवचन का संकलन हैं। जिसमें लगभग 10 पेजों में मुनि श्री का गुणानुवाद है।